शोध पत्रिका

वर्ष 70, अंक 1–4, पूर्णांक 278–281, ISSN 0975-6868

साहित्य संस्थान

इंस्टिट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी–यूनिवर्सिटी), उदयपुर 313001 (राजस्थान)

(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा श्रेणीकरण में "A" दर्जा प्राप्त (डीम्ड–टू–बी–यूनिवर्सिटी)

विषयानुक्रम

क्र. सं.	आलेख	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	**सम्पादकीय**		
2.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महाराणा प्रताप की देन	मनोहर सिंह राणावत	1–7
3.	Rajput, Bhils and Meenas of Harouti (943-1820 AD)	Narayan Singh Rao	8-19
4.	इतिहासवेत्ता लल्लुभाई भीमभाई देसाई और उनका इतिहास लेखन में योगदान	वी. के. त्रिवेदी	20–25
5.	भारत में राष्ट्रवाद के अग्रदूत स्वामी दयानन्द का राजनीतिक चिंतन और उसके परिणाम	दिनेश मांडोत	26–36
6.	Crime and Punishment as gleaned from the Jatakas	Abhick Sarkar	37-47
7.	मारवाड़ की जनाना–ड्योढ़ी में प्रचलित आभूषण एवं जवाहरात (महाराज मानसिंह : 1801–1850 ई. के सन्दर्भ में)	सुशीला शक्तावत व जागृति शर्मा	48–54
8.	स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रमुख प्रहरी : विजयसिंह पथिक	हितेष कुमार बुनकर, नारायण पालीवाल शोयब कुरेशी, कुलशेखर व्यास	55–59
9.	रियासतकालीन प्रतापगढ़ में शिक्षा	श्रीनिवास महावर	60–68
10.	समाज में जाति व्यवसाय–यजमानी प्रणाली के सन्दर्भ में	शशिकान्ता कुमावत	69–77
11.	नाथद्वारा के श्रीनाथजी मन्दिर की प्रशासनिक व्यवस्था	आशुतोष गुर्जर	78–87
12.	सत्याग्रह करते मारे गए दो हजार राव!	उग्रसेन राव	88–92
13.	देवगढ़ ठिकाने का राजनैतिक अध्ययन (1382–1947 ईस्वी)	खुशवन्त चुण्डावत, कुलशेखर व्यास हेमेन्द्र सारंगदेवोत	93–98
14.	वेदों में राष्ट्रीय चिन्तन	महेश आमेटा	99–102
15.	**पुरातात्विक शोध खोज**		
	1. पश्चिमी बनास नदी घाटी में पाषाणकालीन स्थलो की खोज :– एक सर्वेक्षण	चिन्तन ठाकर, पुनाराम पटेल व जीवनसिंह खरकवाल, प्रियांक तलेसरा	103–125
	2. Prehistroic Exploration in Jaisalmer and Jodhpur Districts, Rajasthan : A Preliminary Report of 2018-19	R. Devra, J.S. Kharakwal & A. Mukherjee	126-132
	3. चावण्ड का पुरातात्विक सर्वेक्षण	जीवनसिंह खरकवाल, कुलशेखर व्यास नारायण पालीवाल, मनीष श्रीमाली, कृष्णपालसिंह देवड़ा, शोयब कुरेशी	133–144
	4. रोहिड़ा के अप्रकाशित ताम्रपत्र	पुनाराम पटेल	145–149
	5. लखावली (उदयपुर) का अज्ञात जैन मन्दिर	मीना बया	150–154
16.	**पुनर्नवा**		
	1. बापा रावल	पं. गिरधारीलाल शास्त्री	155–168
	2. राजस्थानी साहित्य–भारत की आवाज	श्री मनोहर शर्मा	169–192
17.	**पुस्तक समीक्षा**		
	1. Uttar purvi Rajasthan kshetra ka Pragaitihasik aivm Aadya Aithasik Sanskrit Anusandhan	Jeewan Singh Kharakwal	193-194
	2. मेवाड़ का इतिहास	कुलशेखर व्यास	195–197
	3. The Early Medieval in South India	Abhick Sarkar	198-201
	4. आधुनिक सलूम्बर का इतिहास (वर्ष 1959 ई. 2009 ई.तक)	रेखा महात्मा	202–203
	5. सूफी संगीत (शैलीगत सौन्दर्य)	गौरव शुक्ला	204–205
	6. शिक्षा का विकास–सर्वशिक्षा योजना	रचना राठौर	206–207
	7. The Garo Tribal Religion: Beliefs and Practices.	Pritish Chaudhuri	208-209
18..	**गति प्रगति**	कुलशेखर व्यास	210–244

शोध पत्रिका वर्ष 70 (1–4) 2019, जीवनसिंह खरकवाल आदि (133–144) ISSN 0975-6868
© साहित्य संस्थान, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर

चावण्ड का पुरातात्विक सर्वेक्षण

जीवनसिंह खरकवाल, कुलशेखर व्यास, नारायण पालीवाल,
मनीष श्रीमाली, कृष्णपाल सिंह देवड़ा, शोयब कुरेशी

सरांश

दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान में चावण्ड एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। इस क्षेत्र में मध्यकाल में राठौड़ राजपूतों का शासन था। इन्हें 16 वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में महाराणा प्रताप ने यहाँ अपनी राजधानी स्थापित की। यहाँ एक किलेनुमा मजबूत संरचना है, जिसे प्रताप का किला कहा जाता है। किले के आसपास विशाल बस्ती के अवशेष है तथा प्राचीन धातु प्रगलन के भी अवशेष हैं। यह क्षेत्र पहाडियो से घिरा है तथा उपजाऊ है। इस शोध पत्र में चावण्ड में हाल के पुरातात्विक सर्वेक्षण की प्रस्तुती हैं।

संकेत शब्द : चावण्ड, पुरातात्विक, महाराणा प्रताप, मेवाड़

प्रस्तावना

महाराणा प्रताप की राजधानी चावण्ड राजस्थान में उदयपुर जिला मुख्यालय से 60 किलोमीटर की दूरी पर उदयपुर–अहमदाबाद राजमार्ग संख्या 8 पर परसाद कस्बे से 13 किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में स्थित है। चावण्ड कस्बा गरगल नदी के बाएँ किनारे पर बसा हुआ है। छप्पन कहे जाने वाले इस भू–भाग पर सन् 1585 में अधिकार करने के पश्चात् स्थानीय जनश्रुति के अनुसार महाराणा प्रताप ने गरगल नदी के दाएँ किनारे की भूमि पर एक नगर का निर्माण कराया (व्यास 1991: 88)। भौगोलिक दृष्टिकोण से चावण्ड का क्षेत्र चारों ओर से ऊँची–नीची पहाड़ियों से घिरा हुआ सुरक्षित क्षेत्र है (चित्र सं.–1)।

प्रताप का किला मध्य भाग में एक ऊँची मगरी पर बना हुआ है। इस किले से लम्बी दूरी तक नजर रखी जा सकती है। मगरी (कम ऊँची पहाड़ी) को घेरकर एक मजबूत परकोटा बनाया गया है। इसके भीतर एक किलेनुमा आकृति तथा महलों के अवशेष हैं। परकोटे के बाहर पूर्वी व दक्षिणी भाग में भवनों के अवशेषों में एक भवन को स्थानीय जानकार भामाशाह की हवेली बताते हैं।

पुरातात्विक अवशेषों में प्राचीन बस्ती, किला, भवन, मृद्भाण्ड एवं धातु प्रगलन के अवशेषों को खोजा गया है। इनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है। परकोटे के अन्दर उत्तर–पश्चिम कोने पर चामुण्डा माताजी का मन्दिर है। यह मन्दिर रेखादेवल शैली में ऊँची जगती पर बना हुआ है। मन्दिर उत्तर मुखी है तथा इसमें गर्भगृह, अन्तराल, मण्डप व प्रवेश द्वार का प्रावधान है।

पुरातात्विक अवशेष

इस क्षेत्र मैं सिंचाई के लिए जल गरगल नदी से प्राप्त होता है। जो पश्चिम से दक्षिणी–पूर्वी दिशा में बहती है। इस से सिंचाई के लिए जल उपलब्ध होता है। यह नदी केवल वर्षा ऋतु में ही बहती है। चावण्ड में

साहित्य संस्थान, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी–विश्वविद्यालय) उदयपुर,
मो. : 8003636352, Email.: jskharakwal66@gmail.com

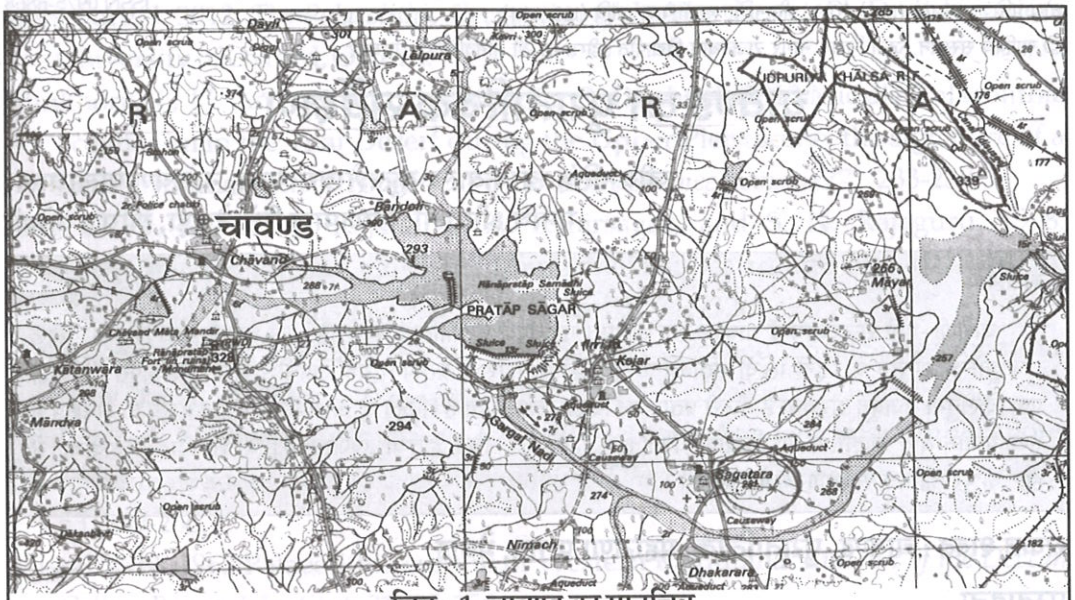

चित्र -1, चावण्ड का मानचित्र

प्राचीन समय में बसासत सम्भवत: इसलिए बसाई गई होगी क्योंकि वर्तमान चावण्ड के निकट पूर्व में गरगल नदी के मार्ग में एक छिछला क्षेत्र है। इसमें बरसात के समय में पर्याप्त मात्रा में जल एकत्र होता है, जो 6 से 8 माह तक निरन्तर बहता रहता है। इस क्षेत्र में पानी की आवक छोटे–छोटे बरसाती नालों से भी होती है। एक महत्त्वपूर्ण नाला उत्तर में नठारा व थाणा से आकर मिलता इसमें मिलता है। आजादी के बाद इस छिछले स्थान पर कम ऊँचाई वाला छोटा बाँध बना दिया गया हैं, जिससे यहाँ पर सालभर सिंचाई हेतू, जल उपलब्ध रहता है। इसी को वर्तमान में प्रताप सागर कहा जाता है। इसी के बीच में एक छोटे से टापू पर महाराणा प्रताप की समाधि स्थित है।

किला

जनश्रुति के अनुसार महाराणा प्रताप ने सन् 1585 के आसपास लूणा राठौड़ को परास्त कर छप्पन के क्षेत्र पर आधिपत्य किया तथा चावण्ड को अपनी राजधानी बनाया (श्यामलदास 1986: 160)। चावण्ड में गरगल नदी के दाएँ किनारे पर महाराणा प्रताप से सम्बन्धित एक प्राचीन किलेनुमा संरचना एवं आवासीय भवनों के अवशेष विधमान हैं। यह संरचना स्थानीय लोगों में प्रताप के किले के नाम से पर जानी जाती है, जो धरातल से लगभग 50 मीटर ऊँची छोटी सी मगरी पर बनी हुई है। मगरी पर प्रताप से सम्बन्धित अवशेषों के निचले स्तरों में भी कुछ अन्य पुरातात्विक अवशेष हैं। प्रताप से सम्बन्धित यह परकोटे जैसे किलेनुमा संरचना पूर्व–पश्चिम दिशा में स्थित है। यह मोटे तौर पर आयताकार है, जिसकी पूर्व से पश्चिम की लम्बाई 76 मीटर एवं उत्तर–दक्षिण की चौड़ाई 37 मीटर तथा दीवारों की मोटाई लगभग 1 मीटर है। यद्यपि इस संरचना में वर्तमान में प्रवेश पूर्व दिशा से दिया गया है (चित्र 2), परन्तु मूल रूप से उत्तरी दिशा की दीवार के बीच में एक प्रवेश द्वार दृष्टिगोचर होता है, जिसे कालान्तर में आंशिक तौर पर बन्द कर दिया गया है। इस परकोटे का प्रथम तल जिसमें यह प्रवेश द्वार खुलता है पूर्णतया: परकोटे की दीवारे 10 डी. के ढलान के साथ

ऊपर उढाई गयी है। आधार में अत्यन्त विशाल आकार के अर्ध गढ़े पत्थर लगाये गये हैं तथा आधार में दीवार की मोटाई लगभग 3 मीटर होगी जो ऊपर उठते हुए कम होती चली गयी है। इस आयताकार संरचना के दक्षिणी–पश्चिमी कोने पर एक लघु आकार का गुप्त द्वार है, जो प्रथम तल में खुलता होगा। वर्तमान में परकोटे की पूर्वी दिशा से प्रवेश कर द्वितीय तल पर पहुँचा जा सकता है।

भवनों के अवशेष

परकोटे में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा उत्खनन करके कुछ आवासीय भवनों के अवशेषों को उद्घाटित किया गया है। इनमें अधिकाशतः कक्ष आयताकार या वर्गाकार है तथा कुछ कक्षों की दीवारें आंशिक रूप से खुली हुई हैं।

यहाँ पाँच कक्षों के अवशेष पहचाने गए हैं (चित्र 3), जिनका आकार क्रमशः इस प्रकार से है। पहले कक्ष का आकार 4.90 x 3.20 मीटर तथा कक्ष के द्वार की चौडाई 2.35 मीटर है, दूसरे कक्ष का आकार 5.20 x 3.20 मीटर तथा द्वार की चौडाई 2.65 मीटर, तीसरे कक्ष का आकार 3.20 x 3.20 मीटर तथा द्वार की चौडाई 1.70 मीटर, चौथे कक्ष का आकार 4.30 x 3.20 मीटर, तथा द्वार की चौडाई 1.25 मीटर तथा पाँचवे कक्ष का आकार 2.30 x 3.20 मीटर तथा द्वार 1 मीटर चौडा है। मध्य कक्ष को छोड़कर बाकी सभी कक्षों के द्वार दक्षिण दिशा की ओर खुलते हैं केवल मध्य वाले कक्ष का द्वार ही पश्चिम दिशा की ओर खुलता है। वर्तमान में इन सभी कक्षों की ऊँचाई 2.50 मीटर बची है। इन कक्षों की दीवारों की मोटाई 60 सेन्टीमीटर है। परकोटे की उत्तरी दीवार के पूर्वी हिस्से में पाँच विभिन्न आकार के आयताकार कक्ष हैं, जिनमें स्वतंत्र प्रवेश है। उसके ठीक सामने दक्षिण की ओर उपरोक्त कक्षों तथा जल संरचना के बीच एक आयताकार भवन संरचना है, जिनमें दो सामान्य कक्ष तथा एक विशाल कक्ष की दीवार दृष्टिगोचर होती है। इस विशाल कक्ष में पूर्वी व पश्चिमी दीवार से प्रवेश दिया गया है। पश्चिम की ओर का द्वार एक अन्य विशाल कक्ष में खुलता है। इस विशाल कक्ष में दक्षिण की ओर से भी सीढ़ियाँ उतर कर पहुँचा जा सकता है। सम्भवतः उपरोक्त सभी कक्षों की छत का पानी जल सरंचना में एकत्र कर साफ किया जाता होगा, जो कि पीने योग्य होगा।

चित्र–2, परकोटे तथा भवनो के अवशेषों का दक्षिण की ओर से चित्र (सौजन्यः भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण)

परकोटे के दक्षिणी–पूर्वी कोने के बाहर कुछ भवनों के अवशेष हैं, जो कि दो मंजिले होंगे। यह कक्ष भी आयताकार व वर्गाकार हैं। इनमें छः कक्ष पूर्णतया व एक आंशिक रूप से खुला हुआ है। कुछ कक्षों की दीवारों में मोटा प्लास्तर किया गया है, जो कि सुर्खी (चूना व ईट का मिश्रण) है। एक कमरे की दीवार में मिट्टी की नली खोजी गई है, जो दीवार में ऊर्ध्वाकार लगी हुई है। यह पानी या धुएँ के निकास के लिये प्रयुक्त हो सकती है। इन कक्षों की उत्तरी दीवार परकोटे की दीवार से चिपकी है तथा इन कक्षों से लाल, राखिया रंग के एवं मुस्लिम ग्लेज्ड वेयर (हरे, फिरोजी, चमकीले) मृद्भाण्ड खोजे गये हैं। इस परकोटे की पूर्वी दीवार के बाहर एक अन्य आयताकार संरचना है, जिसकी लम्बाई 27.50 व चौडाई 23.50 मीटर एवं दीवार की मोटाई 70 सेन्टीमीटर है। यह दीवार अधिकांशतः परकोटे की तरह है।

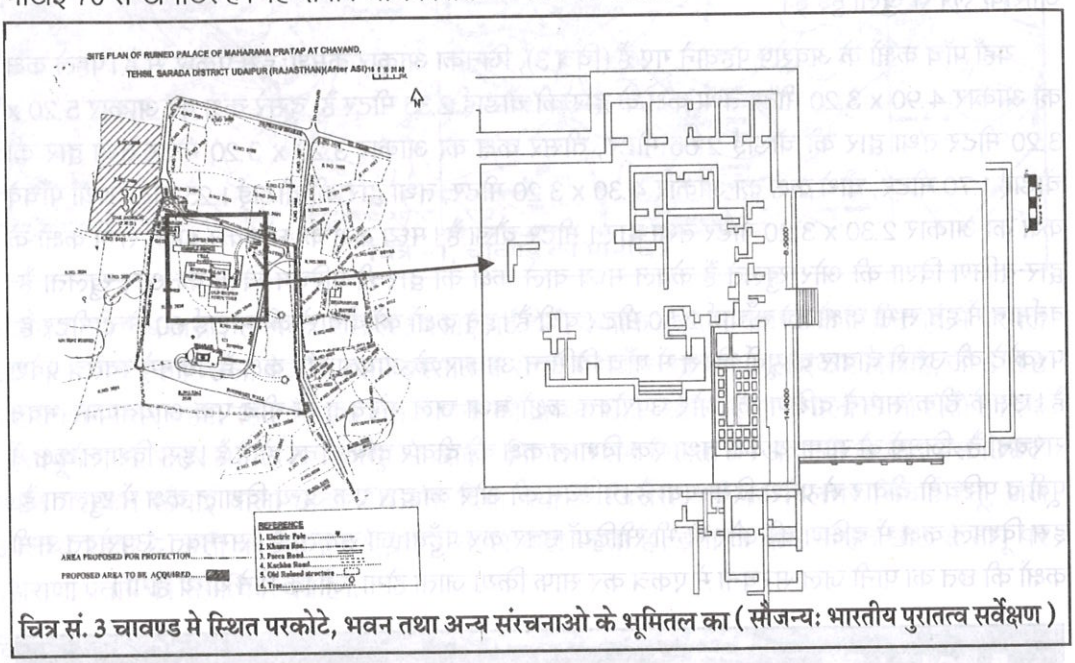

चित्र सं. 3 चावण्ड मे स्थित परकोटे, भवन तथा अन्य संरचनाओ के भूमितल का (सौजन्यः भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण)

किले के निकट बने हुए मकानों के भवनावशेष दिखाई देते हैं। कुछ दीवारों के अवशेषों से अनुमान लगा सकते हैं कि बस्ती के मकानों में कुछ छोटे कमरे, चबूतरे व खुले चौक रहे होगें और मकानों की छतों को बाँस व केलू से ढका जाता होगा। दीवारों में कई केलू के टुकडे आज भी देखने को मिलते हैं। मकानों की बनावट साधारण है, जिनमें मुख्य द्वार के आगे आंगन और चौपाल तथा एक या दो बड़े कमरे रहे होगें। इस क्षेत्र में वर्तमान में खेती की जा रही है। पुरास्थल की चारों दिशाओ में आम लोगों की बस्ती विद्यमान रही होगी, जिनके अवशेष आज भी मिलते हैं (शर्मा 1954: 14–15)।

जल शोधन संरचना

परकोटे के दक्षिणी–पूर्वी कोने में एक आयताकार (8.60 मी. x 5.80 मी.) संरचना है। इस संरचना में 26 विभिन्न प्रकार के आयताकार व वर्गाकार खड्डे बनाए गये हैं और इन सभी में वर्तमान सतह से लगभग 10 सेन्टीमीटर नीचे छिद्र है और ऐसा प्रतीत होता है कि इन खड्डों में छिद्रों से जल एक खड्डे से दूसरे

खड्डे में पहुँचाया जा रहा होगा तथा अन्त में मध्य में बने विशाल आकार के आयताकार खड्डे (2.85 x 1.80 मीटर) में पहुँच रहा होगा। छोटे खड्डे अधिकांशतः 75 x 60 सेन्टीमीटर के हैं तथा इनकी गहराई लगभग 35 सेन्टीमीटर है। इस संरचना के उत्तर–पश्चिमी कोने पर एक नाली बनी हुई है, जिससे पानी सम्भवतः एक आयताकार बड़े खड्डे में आ रहा होगा। इसमें से यह लगभग दो दर्जन खड्डों से होता हुआ मध्य में बने विशाल आयताकार खड्डे में पहुँचता होगा। पुरातत्व विभाग द्वारा इन खड्डों में सीमेन्ट लगा दिया गया है। उत्खनन से पूर्व सन् 2002 में प्रथम लेखक द्वारा किये गए पुरातात्विक सर्वेक्षण में प्रथम व द्वितीय खड्डे में गहनता से जाँच करने पर रेत की परत पायी गई, जिसमें कोयला भी प्राप्त हुआ। अतः ऐसा सम्भव है कि यह जल को शुद्व करने का पारम्परिक संयत्र हो। प्राचीन परम्परा में जल को शुद्ध करने के लिये कोयले और रेत के प्रयोग के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। यहाँ तक कि आधुनिक पानी के शुद्धिकरण यंत्रो में भी कोयले का ही प्रयोग होता है। यह हमारे पारम्परिक ज्ञान की पुष्टि भी करता है। जल सफाई संयत्र की प्राचीन भारतीय तकनीक का यह विशिष्ट उदाहरण है, इसमें भविष्य के शोध में यह जाँच करने की आवश्यकता है कि जल संयत्र की दीवारों में पानी का रिसाव कैसे रोका गया, पत्थरों के बीच झीकी/सुर्खी लगाई गयी या कोई वज्र लेप किया गया (चित्र सं. 4–5)।

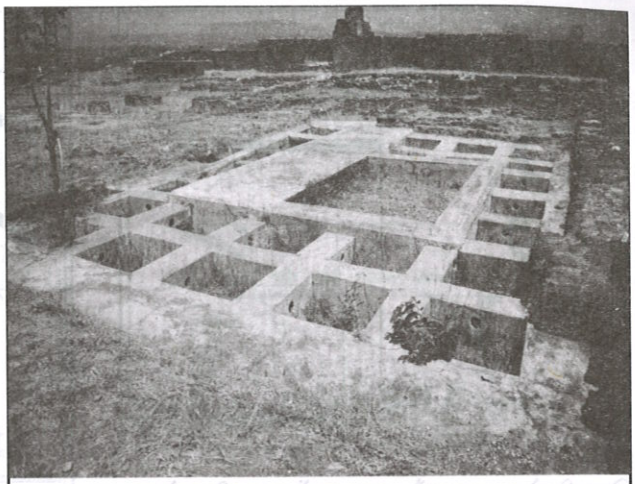

चित्र–4, जल शोधन सरंचना

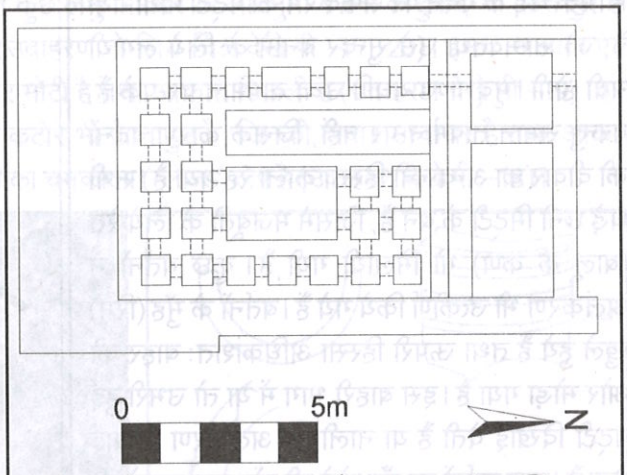

चित्र सं. 5 जल शोधन संरचना का रेखाचित्र

मृद्भाण्ड

सर्वेक्षण में लाल, राखिया रंग व गहरे हरे रंग के चमकदार सतह (ग्लेज्ड वेयर) के बर्तन खोजे गये हैं। अधिकांश बर्तन लाल रंग के ही हैं। कुछ बर्तनों में लाल रंग का लेप भी किया गया है। बर्तनों में मुख्य रूप से लघु व मध्यम आकार के घड़ों के मुहँ के टुकडे प्राप्त हुए हैं। एक दो उदाहरणों को छोडकर सभी का आकार

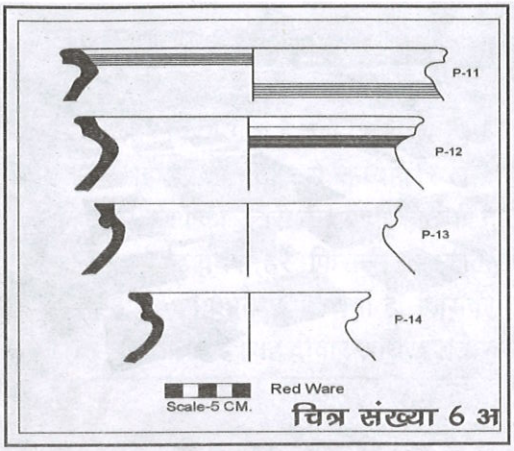

चित्र संख्या 6 अ

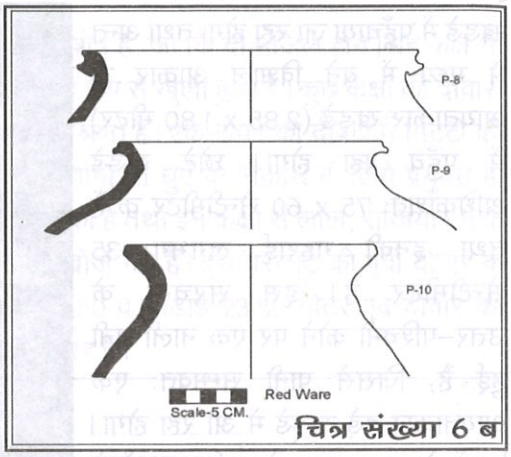

चित्र संख्या 6 ब

बिजली के बल्बनुमा है। कुछ घड़ों का शरीर गोलाकार है। एक घड़े के गर्दन पर सफेद रंग की पट्टी पायी गयी है, जो सम्भवतया उसे सुन्दर बनाने के लिये लगायी गयी होगी। मृद्भाण्ड यद्यपि उच्च तापमान पर पके हैं, परन्तु समान तापमान पर नहीं, जिसके कारण बर्तनों की दीवार का अन्दरूनी हिस्सा काला रह गया है। सभी घड़े छनी मिट्टी के बने हैं, जिसमे मजबूती के लिये रेत (बालू के कण) भी मिलायी गयी है। कुछ बर्तनों में अलंकरण भी उत्कीर्ण किये गये हैं। बर्तनों के मुँह (रिम) खुले हुये हैं तथा ऊपरी हिस्सा अधिकांशतः बाहर की ओर मोड़ा गया है। इस बाहरी भाग में या तो उभरी हुई पट्टी दिखाई देती है या नालीदार अलंकरण दिखाई देता है। कुछ बर्तनों का मुँह तोते की चोंचनुमा बनाने की कोशिश भी की गई है या कभी–कभी मुहँ के हिस्से को पूर्णतया बाहर की ओर मोड़ दिया गया है। अधिकांश बर्तनों में गर्दन नहीं के बराबर है। यद्यपि गर्दन का भाग अवतलाकार है परन्तु अन्दरूनी भाग उतलाकार या कोण बनाता हुआ सपाट बाहर की ओर जाता है। शारीरिक बनावट की तुलना करने पर इस तरह के बर्तन (मेवाड़ में) महाराज की खेड़ी, करणपुर, चन्द्रावती, ईसवाल, कुम्भलगढ़ तथा अन्य मध्यकालीन पुरातात्त्विक स्थलों से प्राप्त मृदभाण्डों के समान हैं (खरकवाल 2016: 20–54)। घड़ों के मुहँ के

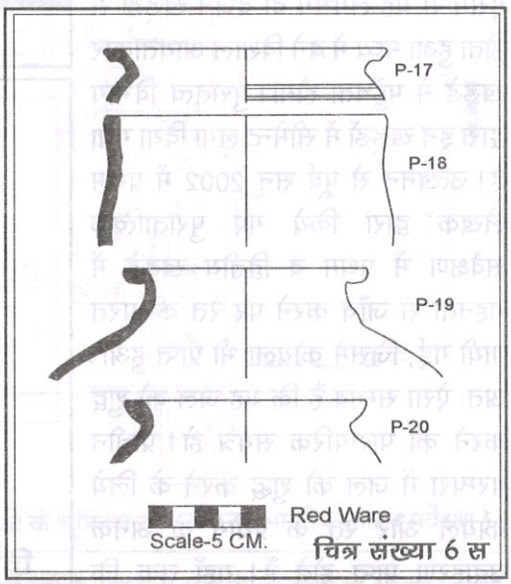

चित्र संख्या 6 स

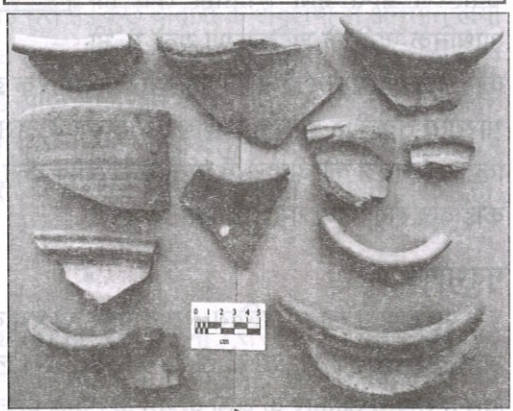
चित्र -7, चावण्ड से प्राप्त लाल मृद्भाण्ड

बाहरी भाग में नालीदार अलंकरण बनाने की परम्परा दक्षिणी राजस्थान के अनेक स्थलों से मिलती है। मध्यम आकार के बर्तनों में लाल लेप लगाकर उच्च कोटि की घिसाई की गयी है (पालीवाल 2016: 80–86) परन्तु उनका अन्दरूनी भाग सामान्यतः उतलाकार होता है (चित्र संख्या–6अ, 6ब, 6स, 7 उदाहरण देखे पी.–11, 12, 13, 14, 19, 21)।

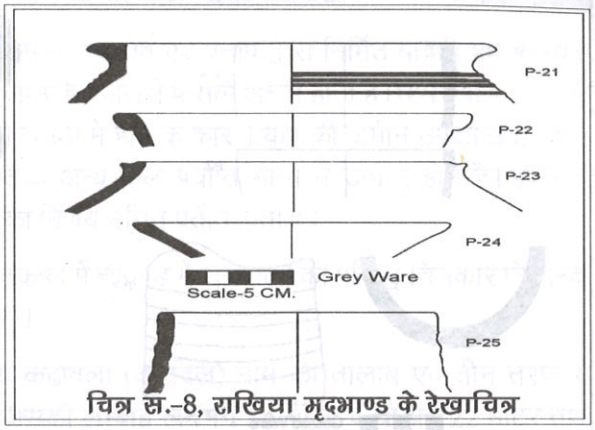

चित्र सं.–8, राखिया मृदभाण्ड के रेखाचित्र

चित्र संख्या–6अ, लाल मृद्भाण्डों के रेखाचित्र चित्र संख्या–6ब लाल मृद्भाण्डों के रेखाचित्र

मिट्टी के घड़ों के टुकडों के अतिरिक्त कुछ लघु आकार के लोटेनुमा बर्तनों के टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं। इनका मुहँ भी बाहर की ओर मुड़ा हुआ है (उदाहरण के लिये चित्र देखे पी.–17, 20)। इसके अलावा एक डोंगे का टुकडा प्राप्त हुआ है, जिसकी दीवार मोटी है तथा आकृति छिछली है (उदाहरण देखे पी.–19)। इस डोंगे की दीवार झरझरी है। संग्रहण में कुछ कटोरे भी प्राप्त हुए हैं, जिनकी दीवार उर्ध्वाधर है तथा आकार रहित मुँह है। ऐसे कुछ कटोरे में गहरे हरे रंग का चमकीला (ग्लेज्ड) लेप है (उदाहरण देखे पी.–18)।

चित्र सं.–9, ग्लेज्ड मृदभाण्ड

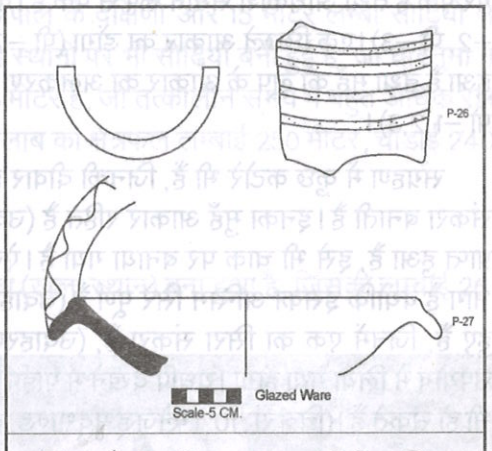

चित्र सं.–9, ग्लेज्ड मृदभाण्ड के रेखाचित्र

चावण्ड से कुछ राखिया रंग के बर्तन भी प्राप्त हुए हैं, जिसमें मध्यम आकार के घड़े, ढक्कन, तष्तूरी व कटोरा प्रमुख हैं (उदाहरण चित्र संख्या–8 देखे पी.–22, 23, 24)। घड़ों के मुँह लाल रंग के बर्तनों की भाँति बाहर की ओर मुड़े हुए हैं तथा सभी बर्तन ऊँचे तापमान में असमान रूप से पके हुये हैं। घड़ों के गर्दन के आसपास नालीदार अलंकरण हैं तथा कभी–कभी उत्खचित अलंकरण भी किया गया है।

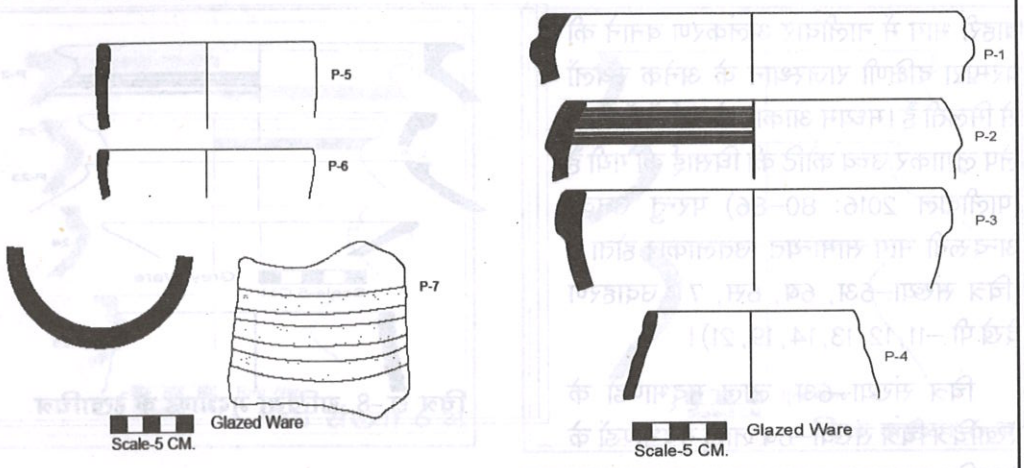

चित्र सं.–10, राखिया रंग के मृदभाण्डों के रखाचित्र

ग्लेज्ड वेयर

यह विशिष्ट प्रकार के बर्तन हैं, जिनमें डोंगे, कटोरे व एक नालीदार आकृति का मृद्भाण्ड मिला है। कुछ डोंगे की दीवार सीधी है तथा कुछ की हल्के से अन्दर की ओर झुकी हुई है। इसके मुहँ को बाहर की ओर मोड़कर चौड़ी पट्टी बनाई गई है। कभी–कभी ऐसी पट्टी में नालीदार अलंकरण भी है। बर्तन ऊँचे तापमान पर पके हैं तथा अधिकांश समान रूप से पके हैं। कुछ बर्तनों की दीवार झरझरी है (उदाहरण देखे पी.–1, पी.–2, पी.–3)। एक छिछले आकार का डोंगा (पी.–27 देंखें) अत्यन्त सुन्दर है। इसमें हरा, चमकीला लेप बचा हुआ है तथा मुहँ को लूप के आकार का अलंकरण भी दिया गया है (चित्र सं. 9 । ग्लेज्ड वेयर देखे रेखा चित्र पी.–1,2,3)।

संग्रहण में कुछ कटोरे भी हैं, जिनकी दीवार हल्की सी अन्दर की ओर झुकी हुई है, ये बर्तन के मुहँ को संकरा बनाती है। इनका मुहँ आकार रहित है (उदाहरण देखे पी.–4)। एक नालीनुमा मृद्भाण्ड का टुकडा प्राप्त हुआ है, इसे भी चाक पर बनाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी पाईप के टुकडे का आधा भाग है क्योंकि इसका अन्तिम सिरे पूर्ण हैं (उदाहरण देखे पी.–6)। इस तरह के कुछ अन्य टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं, जिनमें एक का सिरा संकरा है, (उदाहरण देखे पी.–7) जो सम्भवतः दूसरे पाईप में फंसाने हेतु उपयोग में लिया गया होगा। यधपि देखने में पाईप जैसे दिखते हैं परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि केलू के टुकड़े भी हो सकते हैं। (चित्र सं. 10 । ग्लेजड् मृद्भाण्ड, देखे चित्र पी.–5,6,7)

ग्लेज्ड वेयर के बर्तन मूल रूप से लाल रंग के हैं, जिन्हें छनी मिट्टी से बनाया गया है तथा उसमें दानेदार रेत मिलाकर मजबूती प्रदान की गई है। इस तरह के बर्तन देश में अनेक मुगल कालीन स्थलों से खोजे गये हैं, जिनको मुस्लिम ग्लेज्ड वेयर के नाम से भी जाना जाता है (मुहम्मद 1985 : 105–110)। मेवाड़ में यह बर्तन पहली बार प्रकाश में आए हैं।

जलस्त्रोत (तालाब, बावड़ियाँ व कुण्ड)

चावण्ड पुरास्थल अरावली की शृंखलाओं के मध्य स्थित है। यहाँ पर घने पेड़–पौधे एवं पानी के लिये

तत्कालीन समय में पश्चिमी दिशा में कटावल नाम का तालाब एवं प्रताप द्वारा निर्मित बावड़ी एवं बरसाती नाला प्रमुख स्रोत है। यहाँ की मिट्टी अधिक उपजाऊ है, जिससे फसलें अच्छी होती हैं। छप्पन क्षेत्र में पहाड़ी जलाशय व बावड़ियाँ, कुँए और नदी–नाले बड़ी संख्या में होने के कारण यहाँ की जमीन उपजाऊ है। अतः चावल, गेहूँ और मक्का आदि अनाज, आम तथा अन्य फल पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होते हैं। इसलिये महाराणा प्रताप का चावण्ड को राजधानी बनाने का निर्णय उचित प्रतीत होता है।

मेवाड़ में सन् 1586 से 1597 ईस्वी के शान्तिकाल में चावण्ड में रागमाला का प्रसिद्ध चित्रकार निसारदी द्वारा चित्रण हुआ था (पालीवाल, 1998: 66–67)।

प्रताप ने यहाँ पर स्मारकों के साथ–साथ कढावला (कटावल) नाम का तालाब एवं तीन तरफ से सीढियों वाले एक कुण्ड का निर्माण करवाया, जिसकी लम्बाई लगभग 34 मीटर व चौड़ाई 22 मीटर तथा गहराई 17 मीटर है। इस कुण्ड में तीन तरफ बनी सीढ़ियों की ऊँचाई तथा चौड़ाई 38 मीटर है। तालाब के दक्षिणी दिशा में दो गोखड़े बने हुये हैं, जिन पर चूने का प्लास्तर किया हुआ। इस तालाब की अन्तिम सीढ़ी है इस पर आज भी गर्मी में पानी भरा हुआ रहता है। यह कुण्ड चावण्ड में स्थित नदी के पश्चिमी दिशा के किनारे पर मौजुद है। इस कुण्ड पर रहट के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं इसी के साथ यहाँ पर एक चामुण्डा माता का मन्दिर भी है, जिसके पूर्व तथा उत्तर दिशा की ओर एक कुआँ बना हुआ है। सम्भवतः इसका पानी उस समय में पीने के लिये उपयोग में लिया जाता होगा। वर्तमान में मिट्टी भरने के पश्चात् भी दृष्टिगोचर होता है। इस कुण्ड के पश्चिमी दिशा कि और आधा किलोमीटर दूर सरोवर था, जिसकी पाल 3 मीटर चौड़ी है। यह पाल आज भी जीर्ण–शीर्ण अवस्था में मौजूद है। पाल के दक्षिणी ओर 15 मीटर लम्बा सीढ़ियों से युक्त एक स्नानघर आज भी मौजूद है। बाँध के बीच में दो स्थानों पर भी सीढ़ियाँ बनी हुई है, जो घाटनुमा न होकर बाँध के सहारे बनी हुई हैं। इस तालाब की गहराई 3 मीटर है, जो तत्कालीन समय में बहुत अधिक रही होगी। इस तालाब का मार्ग उत्तर दिशा में अवस्थित है। तालाब का क्षेत्रफल लम्बाई 250 मीटर, चौडाई 240 मीटर, गहराई 3 मीटर है। (पटेल 2009: 320–330)।

जस्ता प्रगलन के अवशेष

किले की पूर्वी दीवार के बाहर एक आयताकार आहता (खुला स्थान) बना हुआ है, जिसकी लम्बाई 26.50 मीटर तथा चौड़ाई 25 मीटर है। इसकी उत्तरी–दक्षिणी व पूर्वी दीवार लगभग 70 सेन्टीमीटर चौड़ी है तथा पश्चिम में यह किले के साथ मिल जाती है। इसी खुली आहते में वर्तमान स्थित किले के प्रवेश द्वार तक पहुँचा जा सकता है। इस आहते की दीवारें 1.5 मीटर तक की गहरी है। हाल के पुरातात्विक सर्वेक्षण से उत्तरी दीवार के नीचे जस्ता प्रगलन के मूसे तथा धातुमल पाया गया है। इन मूसों की लम्बाई 34 सेन्टीमीटर एवं व्यास 10 सेन्टीमीटर तथा नली की लम्बाई

(चित्र सं-11, मूसों का चित्र)

14 सेन्टीमीटर है। जावर में अब तक पाए गए प्रारम्भिक मूसों के समान हैं। जस्ते की मूसों की खोज ने अनेक प्रश्न खड़े कर दिये हैं : यथा किले के साथ जस्ता प्रगलन के अवषेश क्यों हैं। यह कब ओर किसने गलाया है आदि।

चूँकि प्रगलन के अवशेष आहते की दीवार के नीचे हैं। अतः इस बात की पूरी सम्भावना है कि इस आहते की दीवार को धातु प्रगलन की प्रक्रिया समाप्त होने के पश्चात् बनाया है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि प्रताप के समय यह आयताकार आहता नहीं था, जो किले में प्रवेश ऊपर से रहा होगा, जिसे आंशिक रूप से बन्द कर दिया गया है।

चूँकि चावण्ड से जस्ते का खनिज उपलब्ध नहीं है। अतः इसे निश्चित रूप से जावर से लाया गया होगा और प्रयोग के तौर पर यहाँ जस्ता बनाने का कार्य किया होगा। इसमें कितनी सफलता मिली यह कहना मुश्किल होगा चूँकि यह लघु पैमाने पर किया प्रतीत होता है।

किले के दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र के बाहर जो भवन संरचना मिली है वह सम्भवतः प्रताप के रसोई का क्षेत्र हो सकता है, चूँकि वास्तु के हिसाब से यह उचित स्थान है। इन्हीं भवनों की सफाई में ग्लेज्ड वेयर मिलने से यह संकेत मिलता है की प्रताप की मुत्यु के पश्चात सम्भवतः कुछ मुस्लिम शासक जैसे अब्दुल्ला, निसरदी आदि इन भवनों का उपयोग कर रहे होगें और इन्हीं के समय ग्लेज्ड वेयर चावण्ड में आई होगी (व्यक्तिगत सम्पर्क : के. एस. गुप्ता)। यह भी सम्भव है कि किले के पूर्वी हिस्से में जो धातु गलाने की प्रक्रिया होगी उसका प्रयोग यहाँ किया गया है। किले की इस पहाड़ी ढलान पर कभी–कभी धातुमल के टुकड़े भी मिलते हैं, जो इस बात का संकेत देते हैं कि जस्ते के अलावा अन्य धातु जैसे–लोहा आदि को भी गलाने का कार्य किया जाता रहा होगा।

बंडोली

बंडोली गाँव में अनेक मकान प्राचीन बस्ती के ऊपर बसे हुए हैं, खेतों की जुताई करते समय मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं। इनमें लाल व राखियाँ रंग के बर्तन मुख्य हैं। गाँव के उत्तर दिशा में तालाब के किनारे पहाड़ी ढलान पर लौह प्रगलन के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस स्थल पर प्राप्त मृद्भाण्ड बंडोली से प्राप्त हुये बर्तनो के समान हैं। अतः यह स्पष्ट है कि बंडोली की यह बस्ती लूणा राठौड़ व प्रताप के समय की रही होगी, जिस समय यहाँ धातु गलाया गया होगा।

चावण्ड की महत्ता

छप्पन क्षेत्र, छप्पन गाँवों का एक समूह था, जिनकों चार भागों में बाटा गया था। इनके पृथक–पृथक क्षेत्र क्रमशः सलूम्बर, चावण्ड, झाडोल और सेमारी थे। छप्पन के इस सम्पूर्ण प्रदेश में भील एवं मीणा जाति का बहुल था। इसके साथ कुछ राठौड़ सरदार भी थे, जिनके पास बड़ी–बड़ी जागीरदारियाँ थी। दीर्घकाल से इस क्षेत्र पर निवास एवं आधिपत्य रखने के कारण ये "छप्पनियाँ राठौड़" के नाम से भी जाने जाते थे।

अकबर की चित्तौड़ (1567–68) विजय के बाद गोगुन्दा एवं कुम्भलगढ़ प्रताप के मुख्य केन्द्र थे। सन् 1578 ईस्वी में शाहबाज की कुम्भलगढ़ पर सफलता के बाद प्रताप ने झाड़ोल के सघन वन एवं पर्वतीय क्षेत्र को अपनी गतिविधि का केन्द्र बनाया। इस समय झाड़ोल स्थित आवरगढ़ (श्यामलदास, 1986: 153) तथा गोडवाड़ (कोठारी 1985 : 259) का क्षेत्र प्रताप की शरण स्थली बना हुआ था। कुछ समय आवरगढ़ मेवाड़ की अस्थायी राजधानी रही। आवरगढ़ में प्राचीन दुर्ग के कुछ अवषेश आज भी देखें जा सकते हैं। छप्पनियाँ

राठौड़ से महाराणा उदयसिंह के काल से ही संघर्ष चला आ रहा था। यह संघर्ष प्रताप के राज्य काल में समाप्त हुआ (दुग्गड़, रामनारायण 2016: 41)। प्रताप ने इस क्षेत्र में राठौड़ों के विद्रोह का दमन करने पर सर्वप्रथम सलूम्बर जीता। सलूम्बर के राठौड़ों को परास्त कर यह स्थान रावत कृष्णदास चूंडावत को जागीर में दिया था (भण्डारी, 2000: 18–21), जब लूणा राठौड़ विद्रोह करने लगा तो प्रताप ने लूणा राठौड़ को पराजित कर 1585 ईस्वी में चावण्ड पर अधिकार स्थापित किया (श्यामलदास 1986: 158)। जावर आर्थिक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था, जो चावण्ड के निकट ही स्थित था। अतः आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखने हेतु प्रताप ने चावण्ड ही राजधानी स्थापित कर दी थी। चावण्ड में निर्मित विशाल महल राजपरिवार एवं सामन्तों के आवासीय आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम था। महाराणा प्रताप के शासनकाल से सम्बन्धित प्रमुख ऐतिहासिक स्थानों में से चावण्ड मुख्य रहा है। यह स्थान उदयपुर के दक्षिण तथा पश्चिम में पहाड़ों से घिरा हुआ महादुर्गम स्थल है (श्यामलदास 1986: 160)। महाराणा प्रताप ने अपने 25 वर्ष के शासन काल का सबसे अधिक समय 11 वर्ष चावण्ड में व्यतीत किये थे।

मेवाड़ का यह पर्वतीय एवं वनीय छप्पन का क्षेत्र सुरक्षात्मक युद्ध प्रणाली के लिये अत्यन्त उपयोगी होने के कारण प्रताप ने इसको अपनी राजधानी के लिये चुना। पहाड़ी भागों में राजपूतों एवं भीलों के आकस्मिक आक्रमणों से निःसन्देह मुगल सैनिक एवं अधिकारी अधिक आतंकित होगें। चावण्ड रक्षात्मक कार्यवाही की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थल था। अरावली की यह पर्वत माला संकट काल में युद्धरत योद्धाओं के लिये, सैन्य संगठित करने और एकाएक आक्रमण करने के पश्चात पुनः इन्हीं पहाड़ियों में छिप जाने वाली गुरिला युद्ध पद्धति की नीति के लिये ही अधिक उपयुक्त है। चावण्ड के निकट त्रिवेणी संगम के नाले के तट पर महाराणा का अन्तिम संस्कार किया गया। जहाँ उनके स्मारक के रूप में श्वेत पाषाण की आठ स्तम्भ वाली एक छतरी बनी हुई है। वर्तमान में यहाँ पर केन्द्रीय सरकार के पुरातत्त्व विभाग के द्वारा इसे पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा रहा है।

उपसंहार

उपरोक्त पुरातात्त्विक साक्ष्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रताप ने जब चावण्ड को अपनी राजधानी बनाया तो उन्होंने अधिक निर्माण कार्य नहीं करवाया, वह अपने परिवार व सामन्तों तथा सैनिकों के साथ अत्यन्त साधारण भवनों में रहे। चावण्ड का किला मेवाड़ में उपलब्ध चावण्ड के पूर्ववर्ती व समकालीन या उत्तरवर्ती मजबूत सुरक्षा संरचनाओं से बिल्कुल ही भिन्न व साधारण है। इसमें न तो किले की मजबूती के लिये गोलाकार बुर्ज है, न ही मजबूत दीवार और बाहरी बुर्ज सुरक्षा दीवार किले की दीवार में बन्दूक, तोप, गर्म पानी व तेल फैकने जैसी सुविधा भी नहीं है। इससे यह प्रश्न स्वाभाविक तौर पर ऊठता है कि प्रताप जैसा शासक साधारण किले में क्यों रहा? सम्भवतः प्रताप को मेवाड़ का भूगोल, पर्यावरण तथा तत्कालीन परिस्थितियों का सामरिक मिश्रण का ज्ञान था। किले को मजबूत न बनाने की एक वजह यह हो भी सकती है कि आक्रमण होने पर उसकी सेना को चावण्ड छोड़ना पड़ा तो ऐसी स्थिति में मुगल फौज किले का उपयोग न कर सके। इस पुरास्थल का पुरातात्विक सर्वेक्षण करने से हमें प्रताप की तत्कालीन समय की वास्तविक जीवन शैली, रहन–सहन और दुर्गम रास्तों से निकलकर शत्रुओं पर आक्रमण करने की जानकारी प्राप्त होती है। प्रताप ने अपने राज्य की निगरानी को और अधिक मजबूत बनाने के लिये पहाड़ियों को सैनिक छावनी बना रखी थी। चावण्ड में स्थापित राजधानी का पुनः जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर है यह कार्य पूर्ण होने पर महाराणा के वास्तविक जीवन एवं कष्टमय जीवन संघर्ष की झांकी इस क्षेत्र में विद्यमान अवशेषों से ज्ञात हो सकेगी। यद्यपि चावण्ड के निकट पूर्वी व दक्षिणी–पूर्वी क्षेत्र में गरगल नदी के किनारे

आहाड़ संस्कृति के कुछ स्थल खोजे गए हैं, यथा सगतड़ा, कुम्हारिया मगरी आदि (खरकवाल 2014 : 80–90)। अतः इस बात की सम्भावना है कि चावण्ड के इस क्षेत्र में भी आहाड़ संस्कृति का प्रभाव रहा होगा। चावण्ड में आहाड़ व ऐतिहासिक संस्कृति का कोई स्थल अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। चावण्ड में उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर तीन प्रकार के सांस्कृतिक चरण पहचाने जा सकते हैं–

1. प्रथम चरण — मध्य कालीन लूणा सरदारों की बस्ती। (16 वीं शताब्दी से पूर्व)
2. द्वितीय चरण — प्रताप कालीन अवशेष। (1585–1597 ईस्वी)
3. तृतीय चरण — प्रताप के उपरान्त अमरसिंह के काल तक के अवशेष। (1597–1620 ईस्वी)

आभार

जावर व चावण्ड क्षेत्र में पुरातात्त्विक सर्वेक्षण करने की अनुमति व चित्र एवं रेखाचित्र प्रदान करने हेतु भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, जोधपुर मण्डल का आभार। पुरातत्त्व विभाग द्वारा स्वीकृति प्रदान करने से पुरातात्त्विक सर्वेक्षण करने में किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं हुई और विभाग के कार्यकर्ताओं का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। अतः साहित्य संस्थान पुरातत्त्व विभाग का आभारी है। शोध कार्य के दौरान प्रो. के. एस. गुप्ता, प्रो. भवर भादानी, श्री लाल चन्द पटेल के मार्गनिर्देशन एवं सहयोग के लिये हम सभी आभार व्यक्त करते हैं।

सन्दर्भ सूची

कोठारी, देव (सम्पा.) 1985। रणछोड़ भट्ट प्रणीतम् *अमरकाव्यम्*, उदयपुर : साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, पृ. 259।

खरकवाल, जे. एस. 2016। Preliminary Observations of Excavation at Chandravati, Sirohi Rajasthan. *शोध पत्रिका* 67(1–4): 20–54।

खरकवाल, जे. एस. 2014। दक्षिणी पूर्वी राजस्थान का पुरातात्विक सर्वेक्षण। *विरासत* 1 : 80–90। इतिहास एवं संस्कृति विभाग।

दुग्गड़, रामनारायण 2016। *मुँहणोत नेणसी री ख्यात,* अनुवादक, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर।

पटेल, लालचन्द 2009। मध्यकालीन चावण्ड। *शोध पत्रिका* 60(1–4) : 320–330।

पालीवाल, नारायण 2016। चन्द्रावती उत्खनन से प्राप्त मृदभाण्ड। *शोध पत्रिका* 67(1–4): 80–86।

पालीवाल, देवीलाल 1998। *महाराणा प्रताप महान*। जोधपुर : राजस्थानी ग्रन्थागार।

भण्डारी, विमला 2000। *सलूम्बर का इतिहास*। सलूम्बर : अनुपम प्रकाशन।

मोहम्मद, के. के. 1985। ग्लेज्ड वेयर इन इण्डिया। *पुरातत्व* 15 : 105–110।

व्यास, राजशेखर 1991। महाराणा प्रताप कालीन स्थापत्य एवं कला, *महाराणा प्रताप और उसका युग,* उदयपुर : साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ।

श्यामलदास, 1986 (पुनर्मुदण)। *वीर विनोद*, मेवाड़ का इतिहास, भाग–2, खण्ड़–1, प्रकरण 1–9, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।

शर्मा, गोपीनाथ 1954। महाराणा प्रताप कि उजड़ी हुई राजधानी चावण्ड। *शोध पत्रिका* 6(1): 14–15।

शर्मा, गोपीनाथ 1973। *सूरखंड़ प्रशस्ति, राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत*। जयपुर : राजस्थान हिमालय।